अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के 70वें महासम्मेलन में
डॉ. अजित कुमार मोहान्ती, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग
और सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा दिया गया वक्तव्य

अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, आईएईए के अधिकारीगण,
मीडिया के मित्रगण, देवियो और सज्जनो
नमस्ते
और आप सभी को नमस्कार

भारत सरकार की ओर से अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के 70वें महासम्मेलन को संबोधित करना मेरे लिए सम्मान की बात है।

सर्वप्रथम, मैं यहां उपस्थित सभी सदस्य देशों और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी सचिवालय के प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

अध्यक्ष महोदय,

आईएईए के महासम्मेलन के इस ऐतिहासिक 70वें सत्र के अध्यक्ष के पद पर आपके निर्वाचन पर हमारी हार्दिक बधाई। मैं इस महत्वपूर्ण भूमिका में आपकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं। आप भारत के पूर्ण सहयोग पर भरोसा रख सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय,

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के साथ भारत का संबंध उतना ही पुराना है जितनी स्वयं एजेंसी। एटम्स फॉर पीस (शांति के लिए परमाणु) की परिकल्पना के आरंभिक दिनों से ही हमारे वैज्ञानिक और राजनयिक आईएईए को आकार देने वाली मूलभूत चर्चाओं में पूरी तरह से शामिल रहे हैं।

आईएईए के साथ हमारा दीर्घकालिक जुड़ाव इस वर्ष भी विशेष रूप से नाभिकीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित अनुसंधान, विकास एवं प्रशिक्षण हेतु क्षेत्रीय सहयोग समझौते (आरसी) के माध्यम से परिलक्षित होता है।

मई 2026 में, भारत ने मुंबई में आरसीए की अध्यक्षता ग्रहण की। विश्व बंधु भारत - विश्व के मित्र के रूप में भारत - के आदर्श वाक्य के अंतर्गत हम एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी प्रसार और मानव संसाधन विकास को सुदृढ़ बना रहे हैं।

भारत द्वारा आरसीए की अध्यक्षता दक्षिण-दक्षिण सहयोग के प्रति हमारी सुदृढ़ प्रतिबद्धता और यह सुनिश्चित करने के हमारे संकल्प की पुष्टि है कि नाभिकीय विज्ञान के लाभ उन सभी देशों तक पहुंचें जो इन्हें चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय,

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि यह दीर्घकालिक और परस्पर लाभकारी साझेदारी नए आयामों में निरंतर विकसित और विस्तारित हो रही है।

पिछले महीने, भारत ने वाशिंगटन डी.सी. में आयोजित एजेंसी की 'समुद्र में अनुप्रयोगों के लिए लाइसेंस प्राप्त परमाणु प्रौद्योगिकी' नामक एटलस पहल के शुभारंभ समारोह में सदस्य देशों के साथ भाग लिया।

हमारा मानना है कि एटलस पहल हमारे नाभिकीय ऊर्जा मिशन और विश्वसनीय, निम्न कार्बन की विद्युत उत्पादन की हमारी व्यापक परिकल्पना से घनिष्ठ रूप से संरेखित है, जो ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करते हुए जलवायु लक्ष्यों का भी समर्थन करती है।

सिद्ध क्षमताओं वाली अग्रणी नाभिकीय शक्ति के रूप में, भारत इस सामयिक पहल को आगे बढ़ाने में स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास, संवृत ईंधन चक्र, शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता और अनुभव साझा करने के लिए तैयार है।

अध्यक्ष महोदय,

उन्नत नाभिकीय प्रौद्योगिकियों वाले एजेंसी के सबसे बड़े सदस्य देश के प्रतिनिधि के रूप में, हाल ही में भारत द्वारा अर्जित की गई कुछ प्रमुख उपलब्धियों के बारे में इस सभा को संक्षिप्त जानकारी देते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

भारत के महत्वाकांक्षी नाभिकीय ऊर्जा मिशन को साकार करने और हमारे नाभिकीय पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए, भारत के रूपांतरण के लिए नाभिकीय ऊर्जा का

संधारणीय दोहन और अभिवर्धन, शांति अधिनियम, नामक एक परिवर्तनकारी कानून को भारतीय संसद द्वारा दिसंबर 2025 में पारित किया गया।

शांति अधिनियम ने नाभिकीय क्षेत्र को विनयमित करने वाले कानूनों का आधुनिकीकरण किया और संवेदनशील गतिविधियों पर संप्रभु नियंत्रण बनाए रखते हुए इसे सार्वजनिक और निजी संस्थाओं की व्यापक भागीदारी के लिए खोल दिया।

इस कानून ने नाभिकीय नियामक को वैधानिक दर्जा भी प्रदान किया है। हमने घरेलू दायित्व प्रावधानों को वैश्विक सर्वश्रेष्ठ व्यवहारों के और अधिक अनुरूप बनाया है।

अध्यक्ष महोदय,

मुझे यह बताते हुए भी हर्ष हो रहा है कि प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर, पिछला वर्ष भारत के लिए एक अत्यंत अविस्मरणीय दौर रहा।

अप्रैल 2026 में, कल्पाक्कम स्थित 500 मेगावाट क्षमता वाले प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर ने क्रांतिकता प्राप्त की, जिससे भारत ऐसा करने वाला विश्व का दूसरा देश बन गया। इससे भारत फास्ट ब्रीडर रिएक्टर प्रौद्योगिकी में अग्रणी देश के रूप में स्थापित हुआ है।

जून 2026 में, कल्पाक्कम स्थित फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर में स्वदेशी कॉपर-क्लोरीन थर्मोकेमिकल चक्र का उपयोग करते हुए नाभिकीय प्रक्रिया-ऊष्मा-आधारित हाइड्रोजन उत्पादन का विश्व का प्रथम प्रदर्शन किया गया।

इस वर्ष की शुरुआत में, भारत के नियामक, एईआरबी (परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद) ने तारापुर परमाणु विद्युत स्टेशन की इकाई 1 और इकाई 2 के पुनः आरंभ और निरंतर प्रचालन को मंजूरी दी, जो भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड द्वारा प्रचालित दुनिया के सबसे पुराने कार्यरत वाणिज्यिक नाभिकीय रिएक्टर हैं। ये दोनों बॉइलिंग वाटर रिएक्टर अब पांच दशकों से अधिक समय से प्रचालन में हैं।

मार्च 2026 में, हिंगोली, महाराष्ट्र में मेगा साइंस प्रोजेक्ट लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल-वेव ऑब्जर्वेटरी (लीगो-इंडिया ऑब्जर्वेटरी) के लिए इंजीनियरिंग प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन अनुबंध जारी किये गये, जो इस परियोजना का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

अध्यक्ष महोदय,

भारत की "पड़ोसी प्रथम नीति" के एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में, बिम्सटेक सहयोग ढांचे के तहत, टाटा मेमोरियल सेंटर ने बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और म्यांमार के स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए कैंसर देखभाल संबंधी विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

भारत की ब्रिक्स 2026 की अध्यक्षता के अंतर्गत, टाटा मेमोरियल सेंटर ने नाभिकीय चिकित्सा विनियामक मामलों और अंतरराष्ट्रीय विनियामक सहयोग को सुदृढ़ करने संबंधी विषयों पर ब्रिक्स सदस्य देशों के बीच चर्चाओं का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

हमारे स्वतंत्र नियामक परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद ने देश में नाभिकीय और विकिरण संस्थापनाओं की सुदृढ़ नियामक निगरानी को निरंतर बनाए रखने रखा है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि गतिविधियाँ सुरक्षित और संरक्षित ढंग से संचालित हों।

अध्यक्ष महोदय,

"वसुधैव कुटुंबकम" की हमारी सभ्यतागत विचारधारा और मानवता में अटूट विश्वास से प्रेरित होकर, भारत आईएईए और क्षेत्रीय या द्विपक्षीय मंचों के माध्यम से इच्छुक भागीदारों को अपनी विशेषज्ञता और साझेदारी प्रदान करने के लिए तैयार है।

हमारा मानना है कि प्रत्येक राष्ट्र, बड़ा हो या छोटा, को अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने वाले शांतिपूर्ण नाभिकीय अनुप्रयोगों का अधिकार रखता है। एजेंसी के तकनीकी सहयोग कोष में नियमित अंशदानकर्ता के रूप में, हमें आशा है कि निरंतर प्रयासों से न केवल नाभिकीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी में क्षमताओं का बल्कि मूलभूत ढांचे और सुविधाओं का भी सृजन किया जा सकेगा जो लोगों को लाभ पहुंचा सकें और ठोस विकासात्मक परिणाम प्राप्त हों।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह सम्मेलन हमें इस दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होगा और यह सुनिश्चित करेगा कि नाभिकीय विज्ञान में प्रगति मानवता की समान भलाई एवं सामूहिक उन्नति के लिए एक प्रभावी शक्ति बनी रहे।

मैं आईएईए के 70वें महासम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद, जय हिन्द।